कृष्णा सोबती के उपन्यासों में निहित आंचलिकता का विश्लेषणात्मक अध्ययन

*डॉ. राजेश कुमार मीना

आंचलिक उपन्यासों का लेखक, किसी विशेष अंचल की–सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक आदि व्यवस्थाओं एवं परम्पराओं का जनजीवन पर प्रभाव डालने वाली ऐसी शक्ति के रूप में वर्णन करता हैं, जिससे उसकी एक विशिष्ट जीवन पद्वति मुखर हो उठती हैं, और स्थानीय रंग में किसी गांव, शहर या किसी स्थान की परम्पराएं, रूढ़ियां एवं रीति–रिवाज या रहन–सहन, खान–पान का कृत्रिम या स्वाभाविक वर्णन कथानक के रूप में न करके चमत्कारिक व ढंग से प्रस्तुत किया जाता हैं। स्थानीय रंग, सामाजिक कुरीतियां, आर्थिक विपन्नता सामाजिक संघर्ष, पारिवारिक विघटन, एवं देश की व्यवस्था का यथार्थ चित्रण होता हैं। इन सब तथ्यों के आधार पर कृष्णा जी के समग्र उपन्यासों का विश्लेशणात्मक अध्ययन आपेक्षित था, अतः उसके कथानक, चरित्र–चित्रण एवं भाषा में प्रयुक्त छोटे–छोटे संवादों के यथार्थ के विभिन्न चरित्रों के माध्यम से प्रस्तुत कर समाज में होने वाली घटनाओं के यथार्थ को प्रस्तुत किया हैं। इनके उपन्यासों में जाति, धर्म एवं सम्प्रदाय से उपर उठकर मानवीय संवेदना की विशिष्टता को नया आयाम दिया हैं।

विशम्भरनाथ के शब्दों में कह सकते हैं कि – ''आंचलिक उपन्यास में देश के एक विशिष्ट भाग पर (जनपद, अंचल) के क्षेत्र का समग्र चित्रण प्रस्तुत करता हैं। कृष्णाजी ने गांवों में उपेक्षित पडे गांवों व अटारीवाल व पटीवाल के दो कुनबों में होने वाले मत–भेदों को नये रूप में चित्रित किया हैं। गांवों की कृषि, खेतखलिहान, बाग–बगीचे, नदी, तालाब, झरने, पहाड़ियों में फैली प्रकृति की सफेद व हरी चादर, कोलाहल भरे स्वर आंधी, तूफान, बाढ़ ग्रसित नदियों के किनारों पर रहने वाले किसानों की व्यथा एवं सुखात्मक व दुखात्मक अनुभूति हैं।''[1]

महिला उपन्यासकारों में अग्र पंक्ति पर रहने वाली कृष्ण सोबती की औपन्यासिकता का प्रभाव आधुनिक उपन्यास विद्या की अनूठी पहल है जो कि पाठक को ग्रामीण अंचल से लेकर शहरी संस्कृति के प्रत्येक तत्व से परिचित करवाने में अग्रणी स्थान पर हैं।[2]

कृष्णा सोबती की बेबाक लेखन कला हिन्दी उपन्यास साहित्य में अपनी अपूर्व प्रतिमा को दर्षाती हैं। जिन परिस्थितियों से संघर्ष करते हुए शिक्षा अर्जितकर, स्वतन्त्रता आन्दोलन, आजादी के बाद होने वाले भारत पाकिस्तान के विभाजन की भयानक त्रासदी को झेलती हुई समाज सेवा में तत्पर रहते हुए साहित्य सज्जन करती हुई समाज की प्रेरणा स्त्रोत बनी। समकालीन सामाजिक परिस्थितियों व विसंगतियों को उजागर कर ग्रमीण व शहरी परिवेश से जुड़े तथा कथित उच्चवर्गीय सामंती परिवेश, स्त्रियों की स्थितियों व पुरानी परम्पराओं, व आधुनिक परम्पराओं के प्रति होने वाली संघर्ष के यथार्थ को नव्य गति प्रदान की हैं। लेखिका का सम्पूर्ण साहित्य किसी न किसी रूप में नवीन चेतना को प्रकट करता हैं। कृष्णा सोबती का व्यक्तित्व एवं कृतित्व का विस्तृत विवेचन किया हैं। सूर्य की

लालिमा की भांति कृष्णा जी का तेज बढ़ता गया और कथा साहित्य में सरमौर लेखिका के रूप में जानी जाने लगी। स्वतन्त्र, निडर, साहसी एवं आधुनिक विचारों से प्रेरित महिला के रूप में ख्याति अर्जित की।

इनके उपन्यास साहित्य में सामाजिक आर्थिक एवं पारिवारिक जीवन से जुड़ी संवेदनाओं, पुरूश सता के अत्याचारों, कुरीतियों, कुण्ठा, घुटन, मध्यमवर्गीय पारिवारिक विघटन का विस्तृत विवेचन प्रस्तुत शोध प्रबध में प्रस्तुत किया हैं, सभी उपन्यासों की विश्लेषणात्मक अध्ययन के साथ आंचलिक परिवेश का विशद विवेचन जिन्दगीनामा से विस्तृत सांस्कृतिक पृष्ठभूमि व आंचलिकता का परिवेश दृष्टिगत हुआ हैं। स्त्री पुरूष पात्रों की व्यथा–कथा छोटे–छोटे संवादों में मधुर व प्रांजल माशा में प्रस्तुत कर कथा साहित्य को नई गति प्रदान की हैं। महाजनी सभ्यता, नैतिक मानदण्डों का खुला वर्णन इनके सम्पूर्ण साहित्य की विशिष्ट पहचान हैं।[3]

आंचलिकता एक भाववाचक संज्ञा शब्द हैं भाव वाचक संज्ञा की प्रकृति के अनुरूप आंचलिकता अंचल के कार्य (जीवन) अवस्था और गुण को प्रकट करता हैं। आंचलिकता में किसी अंचल विशेष के सांगोपांग जीवन की संस्कृति विशिष्टता, न्यूवता, परिवेश, सरोकार रखने वाली विचारधारा का स्पष्टीकरण होता हैं जो कि पाठक को प्रारम्भ से अन्त तक बांधे रखत हैं कृष्णा सोबती के उपन्यासों में ग्रामीण और शहरी परिवेष व सांस्कृतिक परम्पराओं का समिश्रण स्पष्ट दृष्टिगोचर होता हैं जो आंचलिकता के सभी गुणों से पूरित हैं।

कृष्णा सोबती के उपन्यासों में सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक परिवेश से जुड़ी रूढ़ियां, परम्पराओं, विश्वासों, लोकगीतों, पर्वोत्सवों, रहन–सहन, खान–पान, शादी–विवाह आदि का विस्तृत विवेचन किया गया हैं।

उनके सम्पूर्ण कथा साहित्य में सामाजिक समस्याओं का बहुरंग, स्वरूप एवं उनके समाधान की चर्चा की हैं। उन्होंने अपने उपन्यासों में परिवार में पति–पत्नी, संतान या मुखिया की मृत्यु होने पर दुःख की वेदना सहने की क्षमता अपनों पर किए जाने वाले अत्याचारों को ही यथाथ अभिव्यक्ति प्रदान की हैं।

कृष्णा सोबती के उपन्यासों में निहित आंचलिकता को निम्न बिन्दुओं के माध्यम से विश्लेशित किया जा सकता हैं।

कथानकः

उपन्यास का प्राण तत्व होता हैं कथावस्तु किसी भी रचना की कथा की प्रस्तुति होती हैं जिसमें कथा को प्रारम्भ से अंत तक पात्रों के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता हैं। कृष्णा सोबती के उपन्यासों में पंजाब अंचल की नदियों तथा पहाड़ियों हरी–भरी धरती में रहने वाले ग्रामीण किसानों की वस्तु स्थिति यथार्थ परिवेश, खान–पान, रहन–सहन, शादी–विवाह आदि को कथानक के रूप में प्रस्तुत किया गया हैं।

आंचलिक भाषा का प्रयोगः–

कृष्णा सोबती के उपन्यासों में आंचलिकता का पुट्ट रखा गया हैं। पंजाब के पट्टीवाल और अट्टारीवाल गांव की संस्कृति व रहन–सहन, खान–पान, वेशभूषा, नदियों, पहाड़ों, प्राकृतिक सौन्दर्य, किसानों की वस्तु स्थिति का सिंहावलोकन प्रस्तुत किया गया हैं। अंचल में रचे–बसे लोगों की जीवन दर्शन भारत पूर्व तथा भारत विभाजन के पश्चात् पंजाब की हरी–भर पृथ्वी जिन्दगीनामा उपन्यास में स्पष्ट दृष्टिगोचर होता हैं। अंचल विशेष को अभिव्यक्त करने वाली विशिष्ट सर्जानात्मक भाषा के समावेश ऐसी रचना के लिए आवश्यक हैं। कृष्णा सोबती ग्रामीण जीवन में पली एवं बड़ी हुई हैं अतः उनमें गांव के प्रति अगाध स्नेह देखा जा सकता है।

किसी भी रचना में परिवेश चित्रण और भाषा सृजन के बीच अभिन्न सम्बन्ध की स्थिति रहती हैं। जिनका यह सम्बन्ध प्रगाढ होता हैं, उतना ही रचना का कलात्मकता का स्तर उंचा होता हैं।

हिन्दी जैसी भिन्न भाषा में पंजाबी का लोकरंग सृजित करना लेखिका के लिए एक बड़ी चुनौती थी। जिसे कृष्णा सोबती ने स्वीकार किया।

कृष्णा सोबती के भाषा सृजन में प्रवाहम्यता और लोक रंगत में सराबोर एक विशिष्ट गुण हैं जो जिन्दगीनामा को एक विशिष्ट रूप में प्रदान करता हैं, इसमें कोई दोशय नहीं हैं कि '' जिन्दगीनामा'' आंचलिक उपन्यास में पंजाबी भाषा का प्रयोग सर्वाधिक किया हैं।[4]

कृष्णा जी के समग्र उपन्यासों की भाषा सरल, सहज रूप देखने को मिलता हैं। उनका मानना है कि भाषा की सादकी भाषा की जान हैं। यही उसकी मिठास और उसका यहीं असर हैं।[5]

परम्परागत मूल्यों व आस्थाओं की दावेदार किलष्ट भाषा की अपेक्षा कृष्णा जी की भाषा में सहजता, सरलता, लचीलापन एवं खुलेपन का एहसास देखा जा सकता हैं।

कृष्णा ने उपन्यासों में पंजाबी भाषा के शब्दों का बहुतायत प्रयोग कर आंचलिकता की सार्थकथता सिद्व की हैं। 'लिस्कना, भंभीरी सी भज्जलगनानासहानि, चंगेर, पिण्डा, पत,मत, तावली, तकनीसरगीवेला, धारलेनालिख्या परतना, तत्ती, गोली, मंजिया, सशना, द्विती, झोला, आप्या, खिलडे, मुण्डा, पिण्ड, बेवे, टिण्डा, गड्डी, सिक्ख गदर, खालसा, थैला, भांगड़ा, कुडी, चंगा, सदक, तिहाड़ी, आदि पंजाबी शब्दों का प्रयोग किया हैं।

कृष्णा ने उपन्यासों में कही–कही चालू भाषा का प्रयोग किया हैं। जिससे भाषा आंचलिकता देखते ही बनती हैं। व्यापार सूचक शब्दों का प्रयोग करने से चित्रमयता, मर्मस्पर्शतिता आदि गुणों का समावेश हुआ हैं। यारों के यार में दफतरी परिवेश ऐसी भाषा का चित्रण किया हैं। मित्रों, मरजानी की भाषा की बनावट व गढन बिल्कुल नहीं हैं। सरस और मीठी होते हुए भी इनकी भाषा ललकारती हुई सी प्रतीत होती हैं।[7]

उपन्यासों की संवाद शैलीः–

रचनाकार की भावभिव्यक्ति व विचारों की प्रस्तुति कभी स्वगत रूप में कभी पात्रों के माध्यम से प्रकट करता हैं जिसे कथोपकथन या संवाद कहते हैं। उपन्यास व नाट्य रचना में संवाद की अहम् भूमिका होती हैं क्योंकि चरित्र की अभिव्यक्ति पात्र नारी ही संभव हैं।

संवाद कथा को आगे बढ़ाते हैं तथा रचना में जीवंतता लाने का कार्य करते हैं। संवाद जितने छोटे होंगे भाषा–शैली व पाठक को समझते में सरलता, सहजता रहेगी।संवाद जितने छोटे होंगे पात्रों, देशकाल, भाषा शैली से उद्देश्य तक पहुंचने में तथा कथानक महत्ता बढ़ेगी।संवाद ही वह तथ्य है जो कथानक को उद्देश्य तक पहुंचाने में समर्थ होता हैं।

उपन्यासकार कृष्णा सोबती के समग्र उपन्यासों के छोटे–छोटे संवादों के कारण भाषा का सहज रूप पाठक को प्रारम्भ से अंत तक बांधे रखता हैं।[8]

कृष्णा सोबती के सभी उपन्यासों में छोटे–छोटे आत्म एवं दूसरे व्यक्ति से परस्पर चर्चा करते हुए छोटे–छोटे संवादों के माध्यम से ग्रामीण संस्कृति एवं आंचलिकता से पूरित, परिवेश संस्कार लोक परम्पराएं,

आचार–व्यवहार, रीति–रिवाजों एवं पारिवारिक सदस्यों द्वारा की चर्चा से जुड़े संवादों को प्रस्तुत कर कथानक को गति प्रदान की हैं।[9]

उपन्यासकार कृष्णा जी के उपन्यासों में एक–एक शब्द और छोटे–छोटे वाक्यों में कही गई गहरी और भेदभरी बातें पाठकों की उत्सुकता को चौकन्ना करती हैं, और उत्सुकता उपन्यास को अंत तक बनी रहती हैं। सूरजमुखी अंधेरे के मैं छोटे सरल संवादों ने भाषा प्रवाहमयी बना दिया हैं।[10]

कथानक के साथ–साथ भाषा के आया बदलाव ग्रामीण संस्कृति व शहरी संस्कृति की वस्तु स्थिति का परिचायक हैं। पात्रों के चरित्र उद्घाटन में पारिवारिक सामाजिक व सांस्कृतिक परिवेश से सरोकार रखने वाली आंचलिक शब्दावली का प्रयोग सभी उपन्यासों में बखूबी किया हैं।[11]

शब्द संसार, क्षेत्रीय, देषी, विदेषी का प्रभाव व उपलब्धियां :–

कृष्णा सोबती के उपन्यासों में ठेठ पंजाब अंचल भाषा का उपयोग स्पष्ट दृष्टि गोचर हैं।

कृष्णा सोबती के उपन्यासों का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया तो निष्कर्ष यह पाया कि पंजाब अंचल में रची बसी जनता के द्वारा बोली जाने वाली पंजाबी लोकभाषा प्रयोग इनकी रचनाओं में स्पष्ट परिलक्षित हैं।[12]

लेखिका ने उपन्यासों में हिन्दी, उर्दू एवं देशी–विदेशी शब्दों का प्रयोग खूब किया हैं उर्दू भाषा के शब्दों का प्रयोग दिलो दानिश में देंखे–प्रेमरजाकत, शर्म, अदब, सलीका, सच्चाई और ईमानदारी सिदक आदि महत्वपूर्ण हैं।[13]

कृष्णा सोबती ने हम हसमत में बताया है कि भाषा की सादगी भाषा की जान हैं। यही उसकी मिठास और यही उसका असर हैं। हर शब्द की एक आत्मा होती हैं। शरीर होता हैं, भाव होता हैं, अर्थ होता है, उसका अस्तित्व होता हैं, अतः सोच समझकर उसका इस्तेमाल करना चाहिए।[14]

उपन्यासकार का जीवन भ्रमण शील यायावरी का होने का कारण उन पर हिन्दी, गुजराती, मराठी, पंजाबी, अंग्रेजी, व उर्दू का प्रभाव इनके सम्पूर्ण साहित्य में देखा जा सकता हैं। हिन्दी उर्दू व पंजाबी भाषा युक्त शब्दावली दृष्टव्य हैं–किस्से की वाली जमीन शाहों के छूटों से छूट जाय तो डटकर करे मेहनत और कुछ खाऐं और कुछ बचाऐं।[15]

लेखिका के सभी उपन्यासों में शब्दावली को कथानक एवं चरित्र सृष्टि को नवीन कलेवर के रूप में ऐ लड़की, अम्मू व उसकी बेटी के बीच के संवादों में एकालाप दर्शाया हैं, जीवन में घटित घटनाओं का घटना चक्र क्रमबद्व तरीके से बताती हैं।[16]

अपने उपन्यासों में काब्यमयी, चालू भाषा, मार्मिक भाषा एवं रूमानी भाषा शब्दावली का प्रयोग किया हैं। जिससे आंचलिक शब्दों के साथ–साथ हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी, उर्दू के शब्दों के प्रयोग अधिक देखने को मिलता हैं, शब्दों में साम्य का कारण ग्रामीण संस्कृति की पृष्ठभूमि, हरी–भरी धरती खेत, खलिहानों में अनाज, इकटठा करके वैशाखी के पूजन में पंजाबी भाषा के शब्दों के साथ–साथ अन्य भाषाओं का प्रयोग काव्यात्मक गीतों से प्रयुक्त किया हैं।[17]

निष्कर्षः—

आंचलिकता का मुख्य विशय ग्रामीण संस्कृति, परिवेश, रंग, लोक—कथाएं, लोक विश्वास व अंधविश्वासों को क्षेत्रीय भाषा में प्रयुक्त करना ही पूर्णतः आंचलिकता कहलाती हैं। मानवीय विचारधारा, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, समग्र, रूपों, परम्पराओं और प्रगतियों को आंचलिकता की संज्ञा दी जाती हैं।

***सहायक आचार्य हिन्दी**
श.कै.रि. राजकीय महाविद्यालय,
सवाई माधोपुर (राज.)

संदर्भः—

1. विश्वम्भर नाथ उपाध्याय, पिछले दशक की वेन आंचलिक उपन्यास, साहित्य सन्देश (जनवरी, फरवरी, 1988, पृ. 36)
2. कृष्णा सोबती, मित्रों मरजानी, क्लैशपर
3. हिन्दी आलोचक और आज की कहानी पृ. 31
4. गीता सोलंकी, नारी चेतना और कृष्णा सोबती के उपन्यास पृ. 86
5. कृष्णा सोबती कृष्णा बलदेव वेद सोवती वेद पृ. 97
6. डॉ. कुमारी मीना कृष्णा का रचना संसार पृ. 108
7. डॉ. कुमारी मीना कृष्णा वही पृ. 106
8. कृष्णा सोबती, डार से बिछुड़ी पृ. 18
9. कृष्णा सोबती, डार से बिछुड़ी, पृ. 91
10. कृष्णा सोबती, ये लड़की, पृ. 65
11. कृष्णा सोबती, मित्रों मरजानी, पृ. 38
12. कृष्णा सोबती, सूरजमुखी अंधेरे के पृ. 131
13. कृष्णा सोबती, विलो दानिस, पृ. 36
14. कृष्णा सोबती, रोहिणी एक नगर पृ. 70
15. कृष्णा सोबती, जिन्दगीनामा, पृ. 82कृष्णा सोबती, समय सरगम, पृ. संख्या 9
16. कृष्णा सोबती, सूरजमुखी अंधेरे के, पृ. 105